विनोद बाबु अमर रहे । विनोद बाबु अमर रहे ।। विनोद बाबु अमर रहे ।।।

विनोद महतो के ग्यारहवीं पूण्य तिथि पर
पढ़ो - लढ़ो आदर्श से प्रेरित
एक डाली कुड़माली कविता

टैंशा फुल

कवियत्री करूणामयी केसरिआर
एम.ए. कुड़माली

❖ प्रकाशक ❖
पी. पी. केसरिआर
लोक संस्कृति आखड़ा - बड़ाजमुआ, बरवाअड्डा
धनबाद, झारखण्ड - ८२६००४

BVP-1865
4/1/18
INT-4552
3/9.

कवयित्री :- करुणामयी केसरिआर

(बड़ा जमुआ)

पुरुलिया जेलाक अन्तर्गत माड़ु गाँवे सन् १९५५ ने जन्म। प्राथमिक शिक्षा गाँवेक स्कूले। उच्च माध्यमिक शिक्षा तुलीन जयसीयाराम उच्चमाध्यमिक बिद्यालये स्नातक पुरुलिया निस्तारिनी कॉलेज। एम० ए० राँची विश्वविद्यालये कुड़माली। होमियोपैथिक डा० पुरुलिया से।

१९८१ साल से करम तीर्थ, करम दीप, बानार, मानभुम एक्सप्रेस, सरहुल, आखड़ा, कचिकाचा सबुज साथी, जनविकाश आदि पत्रिकाँइ लिखते आँह। और शिवाजी प्रबन्ध प्रतियोगिताईं प्रथम तुरुस्कार प्राप्त। प्रकाशित ग्रन्थे "एक डँरड़ा फल" पुरुलियार कठिन माटी, पाषाणमय जे देश किताब में ककिता का प्रकाशित। वर्त्तमाने जिला झाड़खण्डे (धनबाद) अन्तर्गत बड़ा जमुआक निवासी हेलाइह।

'शपथ'

* करुणामयी केसरिआर

वीर विनोद लेलिअ शपथ
करलिअ पण तोर समाधी–पासे,

भुखा–सुखा चाषा–भुषा
झाड़खण्डिया आर मुक्खु नि रहब
पढ़ब–लड़ब करलिअ शपथ ॥

कलकारखाना कोयला खनि,
जेईं जाँहा – करिअ मजदुरी,
पढ़ब – लड़ब करलिअ शपथ ! ॥

समाज – सस्कार – संस्कृति
आन – शान – मान बाचवेक खातिर,
पढ़ब – लड़ब करलिअ शपथ ॥

माई माटि बलिदानेक अमरकीर्त्ति
सोनाक आक्षरे लिखभ
पढ़ब – लड़ब करलिअ शपथ ॥

□★□

'झारखण्ड पितामह'

कुड़माली कविता

* करुणामयी केसरिआर
वड़ा जमुआ

हठात जेइसन गिरई बज्रपात
रेडियो बेतार दूरदर्शन
सुनलिए झारखण्डेक पितामह
संसद भवने हृदय घात ।

रिचिक समय, जेइसन कतेक काल,
नीख नीथर – कतेक भागलिअ
आगाम – निगाम चलमान
अचल अनड़ मरदेह पुष्पक विमान
लोकारण बेलियापुरेक कॉलेज मैदान ।

चीरागोड़ा ले बाहर भेलेक मिछिल
छटअ बड़अ कतेक नेता आवल ।
सेदिन देखलिअ, बाबु हामराक
कतेक बड़ महान ।

दाव – दाव हृदकी उठलेक
जेइसन झारखण्डेक उलगुलान
गोटे दिन भेला, सभा बखान
अदला – बदला अहानुभूति प्रदान
सारा झाड़खण्ड दलगत – जात – पात
भूलि भेदाभेद कुम मेलाक महा मिलन ।

सेइदिन बुझे पारलिअ,
हामराक पासेक मानुषटा
महा मानव महा मानव
हामरा सपथ लेलिअ
बिनोद बाबुक डहरे चलब
भगवानेक पासे मानत करलिअ
औकरे बाटे गढ़ब नया भविष्यत ॥

बुझि देखा गुनिरांइ

* करुणामयी केसरिआर

एके लेखे तिन भाइ
लड़कअलाहात सभेले आगांइ,
हांड़ि उपरे बसि दिन गुचाइ
आहात तिन बाटे तिनअ मुंह घुराइ,
आपन मुड़ नउआइ
देखिके गेलं भकुआइ
बुझि देखा पनडित गुनिरांइ ।

हांड़ि हेंठे पांच भाइ
भकता झुला लेखे टांगाइ
झुलअहत एकटि खुंटाइ,
चित काबरा डांग लागाइ
भुड़ गंड काकर बुझा दाइ
देखिकें गेलं अंदमुधाइ,
बुझि देखा पनडित गुनिरांइ ।

खुटॉक हेंठे एकसअ भाइ
सभे एके लेखे देखाइ
एके रंगे आहात अड़हाइ
तर हेरिहर बिछनाइ ।
डांडालाहात यांतांइ पांतांइ
देखिके गेलं अकबकाइ,
बुझि देखा पनडित गुनिरांइ ॥

आगुंइ आहात पनचास भाइ
पेछुंइ आहात आरअ अतनाइ,
आट लक आहात घेराइ
एकटा गोल घेरा बनाइ
मनेक काथा बुझा दाइ
देखिके गेलं चकाइ
बुझि देखा पनडित गुनिरांइ ॥

बिधिक लिला बुझा दाइ
दुइ राग स – भाइ ।
सभेकर गड़ लाल रंगाइ
जिउ सभेकर एके खातांइ ।
बिर रहत सभेकाइ
देखिके गेलं अकबकाइ ।
बुझि देखा पनडित गुनिरांइ ॥

卐 卐 卐

निरन दिन

कुड़माली कविता

* करुणामयी केसरिआर
बड़ा–जमुआ

निरन मासेक लिहि चिहि बेराँ,
चलई पथति झिलफिला,
बाट ढेर धुर नामई तातल धुरा
उपरे केरिआ बादरे घेरा ॥

बुक दिपी – दिपी
मुड़ेक उपरे बिजली चमक
पड़पड़ – कड़कड़,
माईरी टुएक बादे उठतेक झड़ ।

कलसि कांखे काकर धनि
पानी आने जाय अकेला
पाइख – पाखुड़ गोठै – गोठै
घुरि आवेइ आपन घोंसला

गोटेदिन हाजरि खाटी
हाँसाबुड़ी सरपट चलई
चांड़े पहुचे आपन दीड़ा ॥

□★□

सन्त कवि सृष्टिधर

* करुणामयी केसरिआर

कुड़माली कवि सृष्टिधर सिंहदेव काटियार,
आँधारे दिया जोरि देले घारे घार ।
इशाराई साधन करलेहे आपन काम,
उठाउलेहे जनम मूईं जारगग्र नाम ।
एकाइ एकं–स खमता धरि देखाउलेहे काम,
ओजने देबेनि पारव तरह कामेक दाम ।
कुड़माली भाषाविद् आर साहित्याधिराज,
खातिर आहन तोहर दुनियाएक कवि समाज ।
गीत झुमर आर कविगाने, तरा सरस्वति समान,
घारे बाहारे परबतिहारे हेहन तहर गुणगान ।
चिनता भामना तहर दुनियाऐक भालक तेहें,
छटअ बड़अ एक समान देखलाहान तँहे ।
जयतु कुड़माली कवि सृष्टिधर,
झगड़ा झाँटी देई माटि, डेग देलाहाक आगुधार ।
टाँइड़ें टिकरे करलेहे आबाद, समय ना करि बरवाद,
ठाँड़हा मुड़े करलेहे काम जाहाँ, ताहाँ आबाद ।
डुबइते – डुबइते उठाउलेहे मायेक आखिक नाम,
ढाक पिटि जानाउलाहान कुड़माली भाखिक नाम ।
तरा देखाउलेहे डहर आर आँधारे आलअ,
थकलेहे निहि, निहि बसि रहलेहे करलेहे भालअ,
दधिचिक निआर देलाहाक जिउ, रहलन अमर नाम,
धन दोलत छाड़ी गेरुआ बेड़हि धरलेहे बाऊल नाम ।
नाउबा – नाउवा साहित्य कुड़मालीइँ करलेहे सिरजन,
पथि लिखलेहे मानभूमेक धँधौरा, भात भगवान ।
फेड़े ढारि पानी भाषा विज्ञानी, सेइतेलहे आपन धन,
बटरलेहे विशुम सुनाम, राखलेहे मान गुमान ।
भगवान भजे लेलेहे भेक गेरुआ थान,
मानुसके देलाहान हुँस, देखाउलेहे डहर,
राखलेहे जिआइ आपन भा खि आर नेगाधार ।

लिखल रहलन इतिहासे नाम सनाक आखरे,
सभाव चरित्र चाँदेक निआर चन्द्रवंशे जनम तहर ।
हासि खुसि मने गेरुआ बसने बसि योगासने,
आड़ बेराक सूरज गेलि मायेक ठिने ।
संख्या नेखक तहर साधु आर संत गुणेक,
चाँदेक ठाँड़हाइ राधामाधवे चिरअ शांनि मनेक ॥

卐卐卐

उठा जागा

* करुणामयी केसरिआर

उठा जागा – गो हामर सजाति भाइ
एखनअ तरा निदाले आहिआ
कन निदे निदाइ ।
तरा उठा देखा आइख उधराइ
देस भुइ केसन जाहेक आगुआइ ॥
आर ना रहा आंइख मुदि
लके जाहथुन खुंदि ।
उठलाहि सुरज देखेइतके एक बुंदि ।
सभेकर टुटलाहेन निंद, तरा आहिआ निदाइ
उठा जागा बेटा छउआ बेटि छउआ
सभेके दैहान आगुआइ
आर ना रहा निदाइ ॥

□★□

दुनियाएक मालिक

* करुणामयी केसरिआर

दिन सगर केरिआ बादेइर, पानिइ भरल,
सँगे हुर हुरिआ बासात।
जानलाक फाँके आइह बसि हुलकि हुलकि
फिसिर फिसिर पानि,
घड़ि घनटा गनि
घास पात हिलेक ढुलेक आपन खुसि मने
इहर बाट कादा काँचा पाकल गिरत फर
पाइख पाखुड़ गिरि मरत पथरत
काहुनि साड़ा, इहरे चलत नि लक,
टाँइर टिकर हिंआ हुंआ जांहा तांहा पानि।
डाकत बेंग, जांहा आहेक पानि
चालत पाखि झाड़त पांइख, खजत पानि।
डागर डागर गाछ गिरेक कुंआ, बांध जाइक उछलि उछलि
घाटेक पाथर गेला डुबि, दिन सगर गरु बाछुर रहला घारे।
गहाइल भितरे भुते गागात,
जुटेन नि आउड़ पोंआर।
भिंजि भिंजि भइनअ कोआ
इडाइर उडाइरहेतपिपर टरे धेनुआहि डड़आइ
चिहड़ेक धं अड़हि चासा जाइ कुदि कुदि।
आइड़कर छेंदा मुदि, कांपेइ जाड़े
घार घुरि हांथ डबेक डुभाभरि भाड़े।
भालि देखं बाहार बाटे –
थिराइ नि मन भाभंअ धने धने
राइत आहेइक, निंद नि आवेइ, गतर आहि, मन निहि

□★□

दुनियाएक सब मिछाइ सपनअ,
एहे उठं एहे बसंअ एहे गित गाउअं
किना गित काकर गित ?
कन सुरे काकर किना गित गांअ,
किना भावं अकर निआन ?
जानेइ सब आहि –
अहे लागे दुनियाएक मालिक ।

'गहाइर'

* करुणामयी केसरिआर

बल दे, मन दे, गिआन दे
सब समइ राखे पासे ।
सनाक आखड़े लिखाउक नाम
माइएक हंतिर सटि ।
देस दुनिआक भालअ देखं
मर मांइ भाखि निखरउक ॥
बिरसा, सिधु, कानु, शक्ति, गनेस
गकुल निर्मल
निडर ठाड़ हिमाचल डुल ।
जिउ देइ माइ भाखि सिखाउए
हामे लागं तरे सपुत ॥
हंक अधिकार ना भुले जेसे
आपन भाखिक करं बड़ाइ
चलते रहं लखे ठानि डहर
सब लागिहा झाड़खण्डेक शहिद
करुणाके देहाक आसिस ॥

'पार करें नदि'

* करुणामयी केसरिआर

अजान अखहड़ पाहाड़ि डहर
गाड़डा ढड़हा बेड़े तर उपर ।
हिँदे हुंदे झुड़े केरिआ आँधार
छ बादे छ दुसमन डेग देउआ भार ।
नाचहत भुत पेरेत ताल बेताल
नंदि भिरिंगि भुतनाथ बेसामहाल
कुच कुच केरिआ मइधे तारिआ
घुरनि पका निआर घुरेइह हिआ हुंआ ।
झिक झाक आलअ आँधारेक माझे
चलहँ एकाइ डहर ;– सरगेग खजे ।
अजान अखहड़ पाहाड़ि डहर
चलेग नेखि बुता, करे नि पारहँ ठाहर ।
सारा जिनगानि आँईखे बाहरालि पानि
सेंस हेलि समइ गिरि रहम ना जानि ।
कँकाके बुइध, पाइख पाखुड़के आँइखे
निरबलकें देसिन बल, लेड़हाके गड़
मके पार करें नदि, लागहँ गड़ ।

धाई माञ

कोने कोहो मांञ तोके, अछुत – असुचि ताइँ ।
सुचिता घुरोधं तोर पेछुइं सब समय,
तईं आहिस घारे तबेइ आहि रुचि,
जन्मते – जन्मते रकत पूँज दिस पुछि,
तोंञ नाई रहलें मानुष जाइतेला वुरि बन,
गर्भे धरेआके आर मोके करिस जतन ।
दिन राइत समान भाभिके चलिस आपन जतन,
घिन कहिके नेखोउ मने, तर कनअ दिन ।
जाइत बिचार ना करि कनअ दिन,
रकत पुँज घांटिस समे दिन,
राखिस अहेलाई आशा आर भरसा,
माँइ तँए जानिस आसल भालोवाशा,
बिकार नेखऊ तोर मने जेइसन गंगा पानी,
नील कण्ठईं जेइसन दुनिया हेइनि देलेक हानि,
ओगो धाई माञ तोर सेवा जतनेक रिन,
पारबोनि सुधाउए मानुष केऊ कनअ दिन ॥

कुड़माली कविता

* करुणामयी केसरिआर
बड़ा जमुआ, धनबाद

कहे सासतर

* करुणामयी केसरिआर

दिन सगर घुरि फेरि, भिखारी उदिन
नि पारलं जुटाउए खुद कुड़्हा कनंअठिन ।
भुखल पियास मेड़िआल साजुइ
आइके गबचल हामर पिंड़्हांइ
काहुं नि पाउलं ठांइ आउलं हिंआइ
कांहाक अजाना अचिना बाह्रांइ तंइ ।
तर बेटा चर जिउए किना नेखोउ डर ?
आचमका सामाले आंधार मंर
डरे भिखारी कांपे – कांपे थर – थर
भाभे भिखारी अनतरे अनतर ।
खजनि पानि पिंड़्हा राइत सगर
घार तर "भगबान कहे मर ।"
जिब जगतेक सेबा, भगवानेक सेबा,
नरेक मन नारायण, जाने कन जन ।
उमड़ल बादेइर, सुनि अनाइ भिखारी रदना
हाथ जड़अ करि करुणा कहेइ भुल हेलाहि मर,
आंइखे बहे गंगा, बहे लर ढर ढर ।
जिबेक उबगारे, जिउएक जाकर डर
भगबान सहाइ अकर कहे सासतर ।

निर्मल स्मृति

कुड़माली कविता

* करुणामयी केसरिआर

झारखण्डे जनम तोहार
उन्नीस सौ पचास दिसमबर,
जगबंधु पिता माता प्रियबती
छः भाई एक बहिन शान्ती ।

जमशेदपुरेक उलियान वस्ती
माँय – माटी के जनाय प्रणति
गरीब – दुखी समाजेक लड़ाई
बिरासी साले झा० मु० मो० नेता रहले भाई ।

सारा जिनगानी करले लड़ाइ
आपन जनम भुँयेक मान बांढ़ाय ।।
मानुषके देखाउलसिन डहर
सिखाउलसिन आगुवाटे अगुवाय ।।

एक गते – एक मते
माँञ भुँयेक मुक्ति हेंते
सहज सरल उदार हिया
आँधार घाटे जोरले दिया ।

सतासी आठ अगस्त बेरा बारटा
आत ताइक हाथे गेला प्राण टा
छाड़लेंहे आँखी हामर
भुले नि पारिअ तोर आदर
झर – झर बहे आँखि लोर ।

काँदे बाप, माँञ, भाई, बहिन,
गोटे झारखण्ड समाज दिशाहीन
नि पारम बिसरे तोहर आर्दश धरम,
चिरकुमार रही करले देशेक करम ।

नेगि

* करुणामयी केसरिआर

हेकिस तँइ हामर सभे दिनेक नेगि,
टुम परतेइ आनिअ तके भाँगि ।
साबइ सँगे तरपाते गाँथि माला
दुआइरे टाँगि गुचाउलँ मनेक जाला
कनअ नेगे जाइह् तरेठिने,
धइनअ नेगि धइनअ तँइ हेकिस कठिन ।

पुजा पासाँइ तरे गात रहोतउ घटे,
दुइ लकेक जभिहुँ पानि छिँटिस मुड़बाटे ।
डाड़ालाहिस तँइ एहे पितथिम उपरे,
जेइड़ गाड़ेहिस मनतुक भितरे–भितरे ।
कनइ नेगे फुटले दोड़डिअ तरे ठिने,
धइनअ नेगि धइनअ साहाइ तँइ हामर कठिन ।

बेछदँले सुधड़ बासात दिश हामराके,
फुल फरनेगे बतर ताके ।
आँगर भाँगर लड़कल तर गतेर अँगे,
खसामदिक घार नि घारिस गुन तर सँगे ।
डाइरे पाटे गाउले गुण सभेकर सभे दिन,
धइनअ नेगि धइनअ साहाइ तँइ हामर कठिन ।

गाते बहोउ जरक रात काथा नि कहिस,
काटेगेले काँहु तके भागड़ा नि लागिस ।
बसे नि सिखले जुगले, ठाड़े डाड़ाल रहले,
देखे पाउले पाथर सिकड़ गाड़ि बसले ।
आम अमर तर सभेठिन जानचिन,
धइनअ नेगि धइनअ साहाइ तँइ हामर कठिन ।

□★□

पुरनिमाक राइत

करुणामयी महतो
बड़ा–जमुआ

बसन्त पुरणिमाक राइत,
चाँद सुरज एके बरात,
निंदाइरहँ इजतिआईं
देखे पाउलें मँइ ।

इजतिआक पासे दिनमनि हिन
मने हेइस, समान राइत दिन,
घारेक पासेइ आहि बन
फुलेक बास पाउएइह साराखन ।।

सारइ, पिआर, मउहाक बन,
आँउरा बेहरा आर हेन तेन,
बाघ लाकड़ा सियार
एरा बेड़े हुँसिआर ।

देखे नि पाउअत दिने
सारा राइत घुरत आपन मने,
सुने पाउअहँ – काने
माझ बने डाकेस कोने ।

सियारे डाकहत आउआ – आउआ,
नाकेक पासे वहि जाहेक फुलेकर हाउआ,
निचाल राइते चाल देइस कोने,
भाभहँ मने – मने, डाकेस कोने ।।

एसन सुन्दर इजतिआक राइत,
देखिजा, करहन कने बरात,
एसनटा आर पाउबहे नि कनदिने
हामके डाकेइस कहेस काने – काने ।

सँचहँ मईं आपन मने – मने
इजतिआईं कहइस काने - काने ।।

'बँउड़ाल'

* करुणामयी केसरिआर

अँत आर तँत खजे
सत गतेक तिरिजे
निते घिड़रेइक कतेक गेधि ।
बनलेइक वेद पुरान
बाइबेल आर कुरान
जुगले पाहाड़े वहेइक नदि ।।

अड़ फेढ़ केउए पाउला
एसन त केउए नि कहला.
नि हेइक ठिक, कनटा आइजअ ठिक ।

चासा घारे जनम मर
जदि केसउ पाउअँ अर
आजिके मर सुधिआउएँइ रिचिक ।।

कहलि आजिँई दांजि मांजि
खँच धरइआ हेके पानि
आंतर पुरले खजि नि पाउआइक अर।

बनेइक चिरा खेत भाँगड़ाइ
माटिए मनतुक माटि भेउराइ
फेस काँदना मिछाइ लड़ि तर मर ।।

'इरा'

* करुणा॰ । केसरिआर

सभ दुख लेहँ झँकि मँई
हिस तँइ सभे सुखेक भागि ।

हाँसिस तँइ आपन मने
निते मँइ काँदँ तर लागि ।

सुख सपन निंदे निँदाइ तँइ
मुड़तरे रहम मँइ जागि ।

तर तरे आहँ डँड़ुआल
मनतुक नेखँ दईआ मागि ।

सुखे रहेँ माँगँ नि किछु
मान गुमानें आहँ रुसि रागि ।

कुड़मालो भाषा पढ़ा आर पढ़ाउहान
कुड़मालो भाषा शिखा आर शिखाउहान ।

'टुअर'

कुड़माली कविता
* करुणामयी केसरिआर
बड़ा जमुआ

विनोद विना झाड़खण्ड दिशाहीन
जेइसन पानी बिना मीन
झाड़खण्ड राज्य भेलो गठन
पूण्य तिथिक दिने करिअ स्मरण।

विनोद बाबु रहेतेलाक
मने भरसा पावतेलिअ
आज कोने देतो ढाड़स
तोर बिना झारखण्ड टुअर समान।

चालाक लोकेक चालाकी
आम महुले लागाई देलो लियाई
भाई–भाइयें हेई गेलो लड़ाई।

जाइत – पाइत बाहरी, भितरी
मूलवासी – आदिवासी – पिछड़ी,
रक्षण आरक्षण राँधलँअ खिचड़ी।

देखाई देलो संविधानेक नाता
जुड़ि लेलओ आदिवासीक संगे पाँता।

टुसुसेमिनार

चांडे वाहरातेक
पी. पी. केसरिआरेक

१. भिनसरिआ (कुड़माली कविता)
२. कुड़मालीचारी
३. झाड़खण्डेक सपुत
४. कुड़माली - भाँवर

मुद्रक : क्वालिटी प्रिन्टर्स, टुण्डी रोड, बरवाअड्डा